(ग) डॉ० श्यामाप्रसाद मुखर्जी का (घ) पं० दीनदयाल उपाध्याय का।

● गद्यांश पर आधारित अतिलघु उत्तरीय प्रश्न

१. निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर उनके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए—

(क) जन्म लेनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के भरण-पोषण की, उसके शिक्षण की, जिससे वह संमाज के एक जिम्मेदार घटक के नाते अपना योगदान करते हुए अपने विकास में समर्थ हो सके, उसके लिए स्वस्थ एवं क्षमता की अवस्था में जीविकोपार्जन की और यदि किसी भी कारण वह सम्भव न हो तो भरण-पोषण की तथा उचित अवकाश की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी समाज की है। प्रत्येक सभ्य समाज इसका किसी-न-किसी रूप में निर्वाह करता है। प्रगति के यही मुख्य मानदण्ड हैं; अत: न्यूनतम जीवन-स्तर की गारण्टी, शिक्षा, जीविकोपार्जन के लिए रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण को हमें मूलभूत अधिकार के रूप में स्वीकार करना होगा।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।

अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।

(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।

(३) कोई व्यक्ति कब एक जिम्मेदार घटक के नाते समाज के विकास में अपना योगदान करने में समर्थ हो सकता है?

(४) सभ्य समाज किसे कहा जा सकता है?

(५) प्रगति के मुख्य मानदण्ड क्या हैं?

नहीं। जिस व्यवस्था में भिन्नरुचिलोक का विचार केवल एक औसत मानव से अथवा शरीर-मन-बुद्धि आत्मायुक्त अनेक ऐषणाओं से प्रेरित पुरुषार्थचतुष्टयशील, पूर्ण मानव के स्थान पर एकांगी मानव का विचार किया जाए, वह अधूरी है। हमारा आधार एकात्म मानव है, जो अनेक एकात्म मानववाद (Integral Humanism) के आधार पर हमें जीवन की सभी व्यवस्थाओं का विकास करना होगा।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) हमारी व्यवस्था कैसी होनी चाहिए?
(४) 'यत् पिण्डे तद् ब्रह्माण्डे' का न्याय क्या है?
(५) कौन-सी व्यवस्था अधूरी है?

(ग) भारत के अनेक महापुरुष, जिनकी भारतीय परम्परा और संस्कृति के प्रति अनन्य निष्ठा थी, इन बुराइयों के विरुद्ध लड़े। आज के अनेक आर्थिक और सामाजिक विधानों की हम जाँच करें तो पता चलेगा कि वे हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के कारण युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन की कमी से बनी हुई रूढ़ियों परकीयों के साथ संघर्ष की परिस्थिति से उत्पन्न माँग को पूरा करने के लिए अपनाए गए उपाय अथवा परकीयों द्वारा थोपी गई या उनका अनुकरणकर स्वीकार की गई व्यवस्थाएँ मात्र हैं। भारतीय संस्कृति के नाम पर उन्हें जिन्दा रखा जा सकता।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) किस कारण से युगानुकूल परिवर्तन और परिवर्द्धन नहीं हो पाए हैं?
(४) आर्थिक और सामाजिक विधानों की जाँच से हमें क्या पता चलता है?
(५) हमारी सांस्कृतिक चेतना के क्षीण होने के क्या परिणाम हैं?

(घ) पाश्चात्य जगत् ने भौतिक उन्नति तो की, किन्तु उसकी आध्यात्मिक अनुभूति पिछड़ गई। भारत भौतिक दृष्टि से पिछड़ गया और इसलिए उसकी आध्यात्मिकता शब्दमात्र रह गई। 'नाऽयमात्मा बलहीनेन लभ्यः'—अशक्त आत्मानुभूति नहीं कर सकता। बिना अभ्युदय के निःश्रेयस की सिद्धि नहीं होती। अतः आवश्यक है 'बलमुपास्य' के आदेश के अनुसार हम बल-संवर्धन करें, अभ्युदय के लिए प्रयत्नशील हों, जिससे अपने रोगों को दूरकर स्वास्थ्यलाभ कर सकें तथा विश्व के लिए भार न बनकर उसकी प्रगति में साधक और सहायक हो सकें।

प्रश्न— (१) गद्यांश के पाठ और लेखक का नाम लिखिए।
अथवा उपर्युक्त गद्यांश का सन्दर्भ लिखिए।
(२) रेखांकित अंश की व्याख्या कीजिए।
(३) पाश्चात्य जगत् और भारत की स्थिति में क्या अन्तर है?
(४) वह शक्ति क्या है, जिसके अभाव में अशक्त होकर भारत की आध्यात्मिकता शब्दमात्र रह गई?
(५) हम अपने देश की प्रगति में साधक और सहायक कैसे बन सकते हैं?

२. निम्नलिखित पंक्तियों की व्याख्या कीजिए—

पाठ - 5 पं० दीनदयाल उपाध्याय

जीवन-परिचय :- प्रखर विचारक और भारतीय संस्कृति के उपासक पं० दीनदयाल उपाध्याय का जन्म '25 सितम्बर 1916 ई०' को मथुरा जिले के 'नगला चन्द्रभान' नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम 'भगवती प्रसाद' और माता का नाम 'रामप्यारी' था इनके पितामह का नाम 'पं० हरिराम उपाध्याय' अपने समय के प्रसिद्ध ज्योतिषी थे। इनकी माता अत्यन्त कर्तव्य-परायण महिला थी। इनके पिता भगवतीप्रसाद जलेसर में सहायक स्टेशन मास्टर थे। अपनी पारिवारिक परिस्थितियों के कारण मात्र ढाई वर्ष की आयु में ये अपनी माता व भाई के साथ अपने नाना के यहाँ आ गये। कुछ दिनों पश्चात इनके पिता की मृत्यु हो गई। तब ये सात वर्ष के थे। इनकी माता रामप्यारी का भी क्षयरोग से देहान्त हो गया। पं० दीनदयाल बचपन से ही अत्यधिक मेधावी दृढ़-निश्चयी और साहसी थे। इन्होंने दसवीं की परीक्षा सीकर के कल्याण हाईस्कूल से दी और पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान पाकर तत्कालीन सीकर के महाराजा कल्याण सिंह से स्वर्णपदक, छात्रवृत्ति और पुस्तकों के लिए 250 रुपये प्राप्त किए। इण्टरमीडिएट की परीक्षा इन्होंने पिलानी के बिरला कॉलेज से दी इसमें भी इन्होंने पूरे बोर्ड में प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन्होंने बी० ए० की परीक्षा सनातन धर्म कॉलेज, कानपुर और एम० ए० पूर्वार्द्ध की परीक्षा अंग्रेजी विषय से प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। अपनी ममेरी बहन की बीमारी के कारण ये एम० ए० अंग्रेजी उत्तरार्द्ध की परीक्षा नहीं दे सके। इन्होंने लखनऊ से पटना की रेलयात्रा के दौरान '11 फरवरी 1968 ई०' को प्रातःकाल चार बजे मुगलसराय स्टेशन के पास रेलवे लाइन पर ये घायलवस्था में मृत पाए गए।

साहित्यिक सेवाएँ :- उच्चकोटि के वक्ता, प्रखर विचारक, कुशल राजनीतिज्ञ एवं समाजसेवी होने के साथ उच्चकोटि के पत्रकार और गम्भीर प्रकृति के साहित्यकार थे। देश के विभाजन के पश्चात इन्होंने 'राष्ट्रधर्म' मासिक पत्र को प्रकाशित करने का दायित्व सौंपा गया, जिसका उन्होंने पूरी जिम्मेदारी के साथ निर्वहन किया। सम्पादन का कार्य इन्होंने न केवल स्वयं करके सीखा, बल्कि अटल बिहारी वाजपेयी जैसे लोगों को भी सिखाया। राष्ट्रधर्म, 'पांचजन्य' और 'स्वदेश' के सम्पादन से लेकर उनके वितरण तक का दायित्व स्वयं संभाला

कृतियाँ :- पं० दिनदयाल उपाध्याय उच्चकोटि के निबन्धकार, उपन्यासकार और सहृदय कवि थे। कवि के रूप में इन्हें विशेष ख्याति प्राप्त नहीं हुई। इनके रचित कृतियों का उल्लेख इस प्रकार है-

1. **उपन्यास** :- 1- सम्राट चन्द्रगुप्त 2- शंकराचार्य की जीवनी इत्यादि।

2. **निबन्ध संग्रह** :- 1- एकात्म मानवतावाद, 2- द टू प्लान्स, 3- भारतीय अर्थनीति: दशा और दिशा, 4- अखण्ड भारत क्यों ?, 5- भारतीय अर्थनीति: विकास की दशा, 6- राष्ट्रीय जीवन की समस्याएँ, 7- राष्ट्र-चिन्तन, 8- राष्ट्र जीवन की दिशा, 10- भारतीय अर्थनीति: विकास की दिशा, 11- टैक्स या लूट, इत्यादि।

पाठ 5- प्रगति के मानदण्ड - पं० दीनदयाल उपाध्याय

गद्यांशों की सन्दर्भ सहित व्याख्या :-

गद्यांश (क) जन्म लेनेवाले प्रत्येक - - - - - - - - - - स्वीकार करने होगा।

उत्तर :- 1- प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध समाज-सेवी 'पं० दीनदयाल उपाध्याय' द्वारा लिखित 'प्रगति के मानदण्ड' नामक आलेख से उद्धृत है यह आलेख हमारी 'हिन्दी' की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

उत्तर -2- लेखक कहते है कि - प्रत्येक व्यक्ति के लिए न्यूनतम जीवन स्तर की गारण्टी, शिक्षा, आजीविका चलाने के लिए एक रोजगार, सामाजिक सुरक्षा और कल्याण को उसके मूल अधिकारों में सम्मिलित किया जाना चाहिए यदि इन सुविधाओं को मूल अधिकार बना दिया जाय तो उस देश और समाज को उन्हें इनके लिए उपलब्ध कराना ही होगा। इन अधिकारों के प्राप्त होने पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी पूर्ण क्षमता से अपने देश और समाज की प्रगति करने में अपना सहयोग दे सकेगा, जिसके परिणामस्वरूप सर्वत्र प्रगति का साम्राज्य दृष्टिगोचर होगा।

उत्तर -3- संसार में जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी समाज का सदय अवश्य होता है, किसी समाज के सदस्यों की उन्नति पर ही किसी समाज की उन्नति सम्भव है। अर्थात व्यक्ति और समाज की उन्नति एक दूसरे पर निर्भर है।

उत्तर -4- जिस समाज में लोग एक दूसरे के दुःख, दर्द में सम्मिलित रहते है, सुख सम्पति को बाँट कर रखते है और परस्पर स्नेह, सौजन्य का परिचय देते हुए स्वयं कष्ट सहकर दूसरों को सुखी बनाने का प्रयत्न करते है उसे सभ्य समाज कहते है।

उत्तर -5- लेखक ने व्यक्ति के भरण-पोषण और उचित अवकाश को प्रगति का मुख्य मानदण्ड माना है।

गद्यांश -(ग)- भारत के अनेक - - - - - - - - - लिन्दा रखा जा सका।

उत्तर 1- सन्दर्भ - पूर्ववत् -

उत्तर -2- लेखक के अनुसार भारतीय संस्कृति की पुरातन परम्पराओं के वर्तमान में रूढ़ हो जाने के कारण आज समाज में छुआ-छूत जात-पात दहेज प्रथा, मृत्युभोज जैसी बुराइयाँ उत्पन्न हो गई हैं, उसका हमारे महापुरुषों ने डटकर विरोध किया ऐसा नहीं है कि इन महापुरुषों की भारतीय संस्कृति के प्रति कोई निष्ठा नहीं थी। ये महापुरुष वास्तव में भारतीय संस्कृति के सच्चे उपासक थे; इसलिए प्राचीन परम्पराओं के परिवर्तन में वर्तमान में प्रासंगिक न रह जाने के कारण उन्होंने उनके विरुद्ध संघर्ष किया। लोगों को उनके प्रति जाग्रत किया कि अब इनकी वर्तमान में कोई उपयोगिता नहीं रह गयी है, अतः ये त्याज्य हैं।

उत्तर -3- भारतीय संस्कृति की पुरातन परम्पराओं के वर्तमान में रूढ़ हो जाने कारण आज समाज में छुआछूत;-जात-पाँत; दहेज-प्रथा, मृत्युभोज जैसी जो बुराइयाँ उत्पन्न हो गई है। उनका हमारे महापुरुषों ने डटकर विरोध किया।

उत्तर -4- आज के अधिकांश आर्थिक और सामाजिक विधि-विधान अर्थात आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाएं ऐसी ही सांस्कृतिक रूढ़िवादिता के कारण दूषित हो गई हैं।

उत्तर -5- लेखक के अनुसार सांस्कृतिक चेतना की दुर्बलता के कारण हमारी पुरानी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाओं में समयानुसार न तो परिवर्तन हुआ और न उनमें किसी प्रकार का सुधार हुआ जिसके परिणाम-स्वरूप ये वर्तमान में रूढ़ हो गई।

गद्यांश (घ) – पाश्चात्य जगत – – – – – – – – – सहायक हो सकें।

उत्तर – 1 – प्रस्तुत गद्यांश प्रसिद्ध समाज-सेवी 'पं. दीनदयाल उपाध्याय' द्वारा लिखित 'प्रगति के मानदण्ड' नामक आलेख से उद्धृत है। यह आलेख हमारी हिन्दी की पाठ्यपुस्तक के गद्य भाग में संकलित है।

उत्तर – 2 – लेखक के अनुसार व्यक्ति की भौतिक और आध्यात्मिक दोनों उन्नति के लिए बल की सबसे अधिक आवश्यकता होती है। बल की महत्ता को दृष्टिगोचर रखते हुए हमारे शास्त्रों में बल की उपासना करने का आदेश दिया गया है। यदि हम अपना अभ्युदय (उन्नति) करना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपने बल को बढ़ाना चाहिए, उसके पश्चात हमें अपनी उन्नति का प्रयास करना चाहिए। ऐसा करके हम रोगों से दूर रहकर स्वस्थ बने रह सकते हैं। स्वस्थ बनकर हम विश्व के लिए भार नहीं रहेंगे, बल्कि अपनी उन्नति करने के साथ-साथ विश्व देश और समाज की उन्नति करने का साधन बनकर इनकी उन्नति में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी दे सकेंगे।

उत्तर – 3 – लेखक कहते हैं कि पश्चिमी देशों में भौतिक उन्नति करते हुए अपनी सुख सुविधा के साथ सभी साधन जुटाए हैं, किन्तु भौतिकता की इस अन्धी दौड़ के कारण वे आध्यात्मिक उन्नति लेशमात्र भी नहीं रख पाए। इसके विपरीत भारत भौतिक दृष्टि से पिछड़ गया और यहाँ लोग जीवन की मूलभूत सुख-सुविधाओं को जुटाने में ही लगे रहते है।

उत्तर – 4 – लेखक के अनुसार आध्यात्मिक विकास के सन्दर्भ में लोग सोच नहीं पाते, इसलिए आध्यात्मिकता केवल नाममात्र की रह गई है।

उत्तर – 5 – लेखक के अनुसार स्वस्थ और बलिष्ठ व्यक्ति ही विश्व की प्रगति में साधक और सहायक हो सकता है।